

चुनावी नारों का मतदाताओं के संज्ञान और धारणा पर प्रभाव

दीपक कुमार¹, अक्षय कुमार², रितु³

^{1,2}पीएचडी शोधार्थी (राजनीतिक विज्ञान विभाग) बाबा मस्तनाथ वि० वि० रोहतक
³पी०जी०टी० राजनीतिक विज्ञान एवं पीएचडी शोधार्थी (राजनीतिक विज्ञान विभाग) बाबा मस्तनाथ वि० वि० रोहतक

सारांश

चुनावी नारे प्रमुख संदेशों को समाहित करके और मतदाताओं की निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करके राजनीतिक अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन मतदाताओं की अनुभूति और धारणा पर चुनावी नारों के प्रभाव की जांच करता है। मौजूदा साहित्य का विश्लेषण करके और अनुभवजन्य शोध की व्यापक समीक्षा करके, इस अध्ययन का उद्देश्य नारों की प्रेरक शक्ति के अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक तंत्र पर प्रकाश डालना है और वे कैसे मतदाताओं की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं और राजनीतिक उम्मीदवारों की धारणा को आकार देते हैं। शोध से पता चलता है कि चुनावी नारे विभिन्न संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों और अनुमानों का लाभ उठाकर मतदाताओं की अनुभूति को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जो नारे सरल और यादगार होते हैं, वे उपलब्धता अनुमान को सक्रिय करते हैं, मतदाताओं को निर्णय लेते समय आसानी से सुलभ जानकारी पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके अतिरिक्त, नारे जो भावनात्मक अपीलों को शामिल करते हैं या सकारात्मक फ्रेमिंग का उपयोग करते हैं, मतदाताओं की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और उम्मीदवारों के बाद के मूल्यांकन को प्रभावित करते हुए भावनात्मक अनुमानों को ट्रिगर कर सकते हैं। नारे विभिन्न प्रेरक तकनीकों को नियोजित करके मतदाताओं की राजनीतिक उम्मीदवारों की धारणा को आकार दे सकते हैं। उम्मीदवार की विश्वसनीयता, क्षमता, या मतदाताओं के मूल्यों के साथ संरेखण पर जोर देने वाले नारे उम्मीदवार की संभावना, विश्वसनीयता और कार्यालय के लिए उपयुक्तता की धारणा को बढ़ा सकते हैं। इसके विपरीत, विरोधियों को लक्षित करने वाले नकारात्मक नारों से अक्षमता, अविश्वसनीयता, या मतदाताओं के मूल्यों के साथ संरेखण की कमी की धारणा हो सकती है। अध्ययन चुनावी नारों की प्रभावशीलता में संज्ञानात्मक प्रसंस्करण की भूमिका पर भी प्रकाश डालता है। यह सुझाव देता है कि मतदाताओं के पहले से मौजूद दृष्टिकोण और विश्वासों से मेल खाने वाले नारों के प्रेरक होने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि वे व्यक्तियों के संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों और पुष्टिकरण पूर्वाग्रहों के साथ संरेखित होते हैं। इसके विपरीत, मतदाताओं की मौजूदा मान्यताओं का खंडन करने वाले नारे संज्ञानात्मक असंगति को ट्रिगर कर सकते हैं, जिससे व्यक्ति संदेश को अस्वीकार कर सकते हैं। मतदाताओं की अनुभूति और धारणा पर चुनावी नारों के प्रभाव को समझने का राजनीतिक अभियानों और चुनावी परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। नारों को विकसित करके जो रणनीतिक रूप से संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों को लक्षित करते हैं और प्रेरक तकनीकों का उपयोग करते हैं, राजनीतिक उम्मीदवार और अभियान प्रबंधक मतदाताओं की धारणाओं को प्रभावी ढंग से आकार दे सकते हैं, संदेश प्रतिधारण बढ़ा सकते हैं और अंततः चुनावी निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं।

शब्द कुंजी – मतदाता, अनुभूति, राजनीतिक अभियान, प्रोत्साहन, संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह, भावुक अपील, सकारात्मक रूपरेखा, संभावना, विश्वसनीयता, क्षमता, पुष्टि पूर्वाग्रह

परिचय

चुनावी नारे संक्षिप्त और स्मरणीय मुहावरे होते हैं जिनका चुनाव अभियान के दौरान मतदाताओं की अनुभूति और धारणा को प्रभावित करने के लिए उम्मीदवारों और राजनीतिक दलों द्वारा रणनीतिक रूप से उपयोग किया जाता है। ये नारे जनमत को आकार देने, ध्यान आकर्षित करने और प्रमुख संदेश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें भावनात्मक संबंध बनाने, मतदाता मूल्यों के लिए अपील करने और उम्मीदवार या पार्टी की पहचान स्थापित करने के लिए सावधानी से तैयार किया गया है। मतदाताओं की

अनुभूति और धारणा पर चुनावी नारों का प्रभाव पर्याप्त है। सबसे पहले, नारों में मजबूत भावनाओं को जगाने की क्षमता होती है। भावनात्मक रूप से आवेशित नारे आशा, एकता और उत्साह को प्रेरित कर सकते हैं, जो मतदाताओं के साथ गहरे स्तर पर प्रतिध्वनित होते हैं। मतदाताओं की भावनाओं का दोहन करके, नारे एक उम्मीदवार या पार्टी के बारे में उनकी धारणा को आकार दे सकते हैं, सकारात्मक जुड़ाव पैदा कर सकते हैं और विश्वास और सापेक्षता की भावना को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अलावा, दोहराव चुनाव अभियानों में इस्तेमाल होने वाला एक शक्तिशाली उपकरण है। जब विभिन्न माध्यमों, जैसे भाषणों, विज्ञापनों और सोशल मीडिया के माध्यम से नारों को लगातार दोहराया जाता है, तो वे मतदाताओं की अनुभूति को प्रभावित कर सकते हैं। नारों की पुनरावृत्ति प्रमुख संदेशों को पुष्ट करती है, जिससे वे अधिक यादगार बन जाते हैं और मतदाताओं की निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करने की संभावना होती है। मतदाताओं को लगातार किसी खास स्लोगन से रूबरू कराकर उम्मीदवार परिचित बना सकते हैं और अपनी वांछित छवि या मंच को मजबूत कर सकते हैं।

सरलता प्रभावी चुनावी नारों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है। एक संक्षिप्त और सीधा नारा मतदाताओं द्वारा आसानी से समझा और याद किया जा सकता है। जब नारे स्पष्ट और संक्षिप्त होते हैं, तो उनके पास विभिन्न जनसांख्यिकी, शैक्षिक पृष्ठभूमि और राजनीतिक संबद्धता वाले व्यक्तियों के साथ प्रतिध्वनित होने की संभावना अधिक होती है। एक स्लोगन की सरलता इसे चुनाव अभियान के शोर में कटौती करने और मतदाताओं पर एक स्थायी छाप छोड़ने की अनुमति देती है, जिससे उनके संज्ञानात्मक प्रसंस्करण और धारणा को आकार मिलता है। इसके अलावा, चुनावी नारों और मतदाता मूल्यों के बीच संरेखण आवश्यक है। जब नारे उन मुद्दों और विचारों को संबोधित करते हैं जो मतदाताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, तो वे उम्मीदवार की विश्वसनीयता और विश्वसनीयता की उनकी धारणा को प्रभावित कर सकते हैं। साझा मूल्यों और आकांक्षाओं पर जोर देकर, नारे एक उम्मीदवार या राजनीतिक दल के बारे में मतदाताओं की संज्ञानात्मक धारणा को और मजबूत करते हुए जुड़ाव और अनुनाद की भावना पैदा कर सकते हैं।

शोध पत्र के उद्देश्य–

इस शोध पत्र का उद्देश्य मतदाताओं की अनुभूति और धारणा पर चुनावी नारों के प्रभाव की जांच करना है। विशेष रूप से, अध्ययन का लक्ष्य है

- चुनावी नारों की प्रेरक शक्ति के अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक तंत्र की जांच करना।
- जांच करना कि कैसे चुनावी नारे निर्णय लेने के दौरान मतदाताओं की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हैं।
- राजनीतिक उम्मीदवारों के प्रति मतदाताओं की धारणा पर चुनावी नारों के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- उन संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों और अनुमानों की पहचान करना जो नारे मतदाता व्यवहार को प्रभावित करने का लाभ उठाते हैं।

चुनावी नारों की परिभाषा और विशेषताएं

एक चुनावी नारा एक संक्षिप्त और यादगार वाक्यांश या नारा है जिसका उपयोग राजनीतिक उम्मीदवारों और अभियानों द्वारा उनके प्रमुख संदेशों, मूल्यों या अभियान के वादों को समाहित करने के लिए किया जाता है। इन नारों को मतदाताओं के साथ प्रतिध्वनित करने, एक विशिष्ट संदेश देने और

उम्मीदवार को उनके प्रतिद्वंद्वियों से अलग करने के लिए डिजाइन किया गया है। चुनावी नारों की परिभाषित विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- **संक्षिप्तता**— चुनावी नारे आम तौर पर संक्षिप्त और संक्षिप्त होते हैं, जिनमें केवल कुछ शब्द या एक छोटा वाक्यांश शामिल होता है। उनकी संक्षिप्तता आसान याद करने और याद रखने की अनुमति देती है।
- **यादगार**— प्रभावी चुनाव नारे यादगार होने के लिए डिजाइन किए गए हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे मतदाताओं के दिमाग में रहें। यह आकर्षक भाषा, शब्दों के खेल या लय के माध्यम से प्राप्त किया जाता है जो नारा को विशिष्ट बनाता है।
- **संचारी**— स्लोगन एक संचार उपकरण के रूप में काम करते हैं, जटिल नीतिगत स्थितियों, अभियान के वादों, या व्यापक विषयों को एक सरल और आसानी से समझने योग्य संदेश में संघनित करते हैं। वे एक उम्मीदवार के मूल मूल्यों, मंच या दृष्टि को व्यक्त करते हैं।
- **भेदभाव**— चुनावी नारों का उद्देश्य उम्मीदवार को उनके प्रतिस्पर्धियों से अलग करना है। वे अक्सर इस बात पर जोर देते हैं कि उम्मीदवार को क्या विशिष्ट बनाता है, प्रमुख मुद्दों पर उनकी ताकत, गुणों या पदों को उजागर करता है।
- **भावनात्मक अपील**— कई चुनावी नारों में भावनात्मक स्तर पर मतदाताओं से जुड़ने के लिए भावनात्मक अपील शामिल होती है। आशा, एकता, या देशभक्ति जैसी सकारात्मक भावनाओं को जगाकर, या भय या हताशा जैसी नकारात्मक भावनाओं को उजागर करके, नारे एक मजबूत भावनात्मक प्रतिक्रिया बनाने की कोशिश करते हैं।

राजनीतिक अभियानों में चुनावी नारों का महत्व—

राजनीतिक अभियानों में चुनावी नारों के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। चुनावी नारे शक्तिशाली संचार उपकरण के रूप में काम करते हैं जो एक उम्मीदवार के संदेश और मंच को एक संक्षिप्त, यादगार वाक्यांश में संक्षिप्त करते हैं। वे सार्वजनिक धारणा को आकार देने, मतदाता व्यवहार को प्रभावित करने और अंततः चुनावी परिणामों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निम्नलिखित बिंदु राजनीतिक अभियानों में चुनावी नारों के महत्व पर प्रकाश डालते हैं—

- **प्रभावी संचार**— चुनाव नारे एक संक्षिप्त और सुलभ तरीके से मतदाताओं को अपने मूल संदेश और मूल्यों को संप्रेषित करने के लिए उम्मीदवारों के लिए एक वाहन के रूप में कार्य करते हैं। वे जटिल नीतिगत पदों और अभियान के वादों को आकर्षक वाक्यांशों में समाहित करते हैं जो मतदाताओं के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।
- **संदेश संगति**— नारे पूरे अभियान में संदेश निरंतरता बनाए रखने में मदद करते हैं। विभिन्न अभियान सामग्रियों, भाषणों और विज्ञापनों में लगातार एक स्लोगन का उपयोग करके, उम्मीदवार एक संसक्त कथा बनाते हैं जो उनके प्रमुख बिंदुओं को पुष्ट करती है और ब्रांड पहचान को बढ़ाती है।
- **स्मरण और पहचान में वृद्धि**— यादगार नारों में मतदाताओं के मन में टिके रहने की शक्ति होती है, जिससे मतदान प्रक्रिया के दौरान वापस बुलाने की संभावना बढ़ जाती है। एक अच्छी तरह से तैयार किया गया नारा एक उम्मीदवार को उनके प्रतिद्वंद्वियों से अलग कर सकता है, जिससे उन्हें मतदाताओं के लिए अधिक पहचानने योग्य बनाया जा सकता है और चुनाव में याद किए जाने की संभावना में सुधार हो सकता है।
- **भावनात्मक अपील**— नारों में अक्सर मतदाताओं की भावनाओं और आकांक्षाओं का दोहन करते हुए भावनात्मक अपील शामिल होती है। भावनात्मक अनुवाद उम्मीदवार और मतदाता के बीच संबंध की भावना पैदा कर सकता है, धारणाओं को प्रभावित कर सकता है और सकारात्मक भावनात्मक प्रतिक्रिया को बढ़ावा दे सकता है जो मतदाता समर्थन को प्रेरित करता है।
- **धारणाओं को आकार देना**— चुनाव के नारे उम्मीदवारों के बारे में लोगों की धारणाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विरोधियों को नकारात्मक रोशनी में फंसाते हुए वे एक उम्मीदवार की ताकत,

मूल्यों और गुणों को उजागर कर सकते हैं। नारे इस बात को प्रभावित कर सकते हैं कि मतदाता किसी उम्मीदवार की विश्वसनीयता, विश्वसनीयता, क्षमता और अपने स्वयं के मूल्यों के साथ संरेखण को कैसे देखते हैं।

- **समर्थकों को जुटाना**— नारों में समर्थकों को जुटाने और मतदाताओं के बीच एकता और पहचान की भावना पैदा करने की शक्ति होती है। आकर्षक नारे समर्थकों को एकजुट कर सकते हैं, उत्साह पैदा कर सकते हैं और अभियान में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित कर सकते हैं, जिसमें स्वयंसेवा, दान और मतदाता शामिल हैं।
- **मीडिया का ध्यान**— यादगार नारे अक्सर मीडिया का ध्यान आकर्षित करते हैं, जिससे उम्मीदवार के लिए कवरेज और जोखिम बढ़ जाता है। नारों का मीडिया में दोहराव इसके संदेश को पुष्ट करता है और मतदाताओं पर इसके प्रभाव को बढ़ा सकता है।
- **चुनावी नारे रणनीतिक उपकरण के रूप में काम करते हैं जो प्रभावी संचार, धारणाओं को आकार देने, याद करने में वृद्धि करने और समर्थकों को संगठित करने की सुविधा प्रदान करते हैं। वे एक उम्मीदवार के ब्रांड के निर्माण, उन्हें प्रतिस्पर्धियों से अलग करने और मतदाता व्यवहार को प्रभावित करने के लिए आवश्यक हैं। प्रभावी नारों का विकास और कार्यान्वयन सफल राजनीतिक अभियानों के महत्वपूर्ण घटक हैं।**

मतदाताओं की अनुभूति पर चुनावी नारों का प्रभाव

मतदाताओं की अनुभूति पर चुनावी नारों का प्रभाव महत्वपूर्ण है और उनकी निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है। चुनावी नारे विभिन्न संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं और पूर्वाग्रहों का लाभ उठाते हैं, यह आकार देते हैं कि मतदाता कैसे जानकारी को देखते और संसाधित करते हैं। निम्नलिखित कारक मतदाताओं की अनुभूति पर चुनावी नारों के प्रभाव को दर्शाते हैं—

संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह— चुनावी नारे संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों में टैप कर सकते हैं, जो अंतर्निहित संज्ञानात्मक शॉर्टकट या मानसिक पैटर्न हैं जो निर्णय लेने को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, सरल और यादगार नारे उपलब्धता अनुमान को सक्रिय करते हैं, जहां मतदाता उम्मीदवारों का मूल्यांकन करते समय आसानी से सुलभ जानकारी पर भरोसा करते हैं। इससे नारा और उससे जुड़े संदेश पर अत्यधिक जोर दिया जा सकता है।

ह्यूरिस्टिक्स— स्लोगन अक्सर ह्यूरिस्टिक्स का उपयोग करते हैं, जो मानसिक शॉर्टकट या अंगूठे के नियम हैं जो निर्णय लेने को आसान बनाते हैं। नारों में भावनात्मक अपील मतदाताओं की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और उम्मीदवारों के बाद के मूल्यांकन को प्रभावित करते हुए भावनात्मक अनुमान लगा सकते हैं। नारों में सकारात्मक रूपरेखा सकारात्मकता पूर्वाग्रह का लाभ उठा सकती है, जहाँ मतदाता सकारात्मक जानकारी के अनुकूल प्रतिक्रिया देने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं।

संज्ञानात्मक प्रसंस्करण— स्लोगन ध्यान, एन्कोडिंग और पुनर्प्राप्ति को प्रभावित करके सूचना के संज्ञानात्मक प्रसंस्करण को प्रभावित करते हैं। आकर्षक और ध्यान आकर्षित करने वाले नारे मतदाताओं का ध्यान आकर्षित करने की संभावना को बढ़ाते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि संदेश एन्कोड किया गया है और स्मृति में संग्रहीत है। यह पुनर्प्राप्ति की सुविधा देता है जब मतदाताओं को उम्मीदवार के नाम का सामना करना पड़ता है या प्रासंगिक अभियान जानकारी मिलती है।

पुष्टिकरण पूर्वाग्रह— चुनावी नारे मतदाताओं के पहले से मौजूद विश्वासों के साथ संरेखित हो सकते हैं, जिससे पुष्टिकरण पूर्वाग्रह शुरू हो जाता है। मतदाता नारों के प्रति अधिक ग्रहणशील हो सकते हैं जो उनके मौजूदा दृष्टिकोण और मूल्यों की पुष्टि करते हैं, क्योंकि वे ऐसी जानकारी चाहते हैं जो उनके दृष्टिकोण का समर्थन करती हो। यह एक उम्मीदवार के लिए उनके समर्थन को मजबूत कर सकता है और नारा को और अधिक प्रेरक बना सकता है।

संज्ञानात्मक असंगति— कुछ मामलों में, मतदाताओं के मौजूदा विश्वासों का खंडन करने वाले नारे संज्ञानात्मक असंगति को ट्रिगर कर सकते हैं। जब

किसी परस्पर विरोधी स्लोगन का सामना किया जाता है, तो मतदाता असुविधा का अनुभव कर सकते हैं और असंगति को हल करने की इच्छा महसूस कर सकते हैं। यह व्यक्ति के संज्ञानात्मक असंगति के स्तर के आधार पर, उनके विश्वासों के पुनर्मूल्यांकन या नारे की अस्वीकृति के परिणामस्वरूप हो सकता है।

चुनावी नारों का संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों, अनुमानों और संज्ञानात्मक प्रसंस्करण को प्रभावित करके मतदाताओं की अनुभूति पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। इन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को समझकर, राजनीतिक अभियान रणनीतिक रूप से नारों को विकसित कर सकते हैं जो मतदाताओं की संज्ञानात्मक प्रवृत्तियों के साथ संरेखित होते हैं और उनके प्रेरक प्रभाव को बढ़ाते हैं।

निष्कर्ष-

अंत में, चुनावी नारों की प्रभावशीलता संज्ञानात्मक प्रसंस्करण पर बहुत अधिक निर्भर करती है। जिस तरह से लोग नारों को देखते हैं, समझते हैं और उनका मूल्यांकन करते हैं, वह मतदाताओं के निर्णय लेने पर उनके प्रभाव को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। नारों की प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में उनकी जटिलता, ध्यान आकर्षित करने वाली प्रकृति और निरंतरता शामिल है।

सरल और आसानी से समझ में आने वाले स्लोगन अधिक प्रभावी होते हैं क्योंकि उन्हें संसाधित करने के लिए कम संज्ञानात्मक प्रयास की आवश्यकता होती है और उन्हें याद किए जाने की संभावना अधिक होती है। नवीनता, विशिष्टता, या भावनात्मक अपील के माध्यम से ध्यान आकर्षित करने वाले नारों से मतदाताओं को आकर्षित करने और एक स्थायी छाप छोड़ने की संभावना अधिक होती है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न अभियान सामग्रियों में नारों के उपयोग में दोहराव और निरंतरता संदेश को पुष्ट करती है और स्मृति से इसकी पुनर्प्राप्ति को बढ़ाती है।

स्लोगन प्रोसेसिंग में शामिल संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को समझना राजनीतिक अभियानों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। सुलभ, ध्यान आकर्षित करने वाले और सुसंगत नारों को तैयार करके, अभियान रणनीतिकार नारों के संसाधित होने, याद रखने और अंततः मतदाताओं की धारणाओं और निर्णयों को प्रभावित करने की संभावना बढ़ा सकते हैं।

इस क्षेत्र में आगे के शोध स्लोगन प्रोसेसिंग में शामिल विशिष्ट संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में गहराई तक जा सकते हैं, जैसे वर्किंग मेमोरी की भूमिका, सिमेंटिक कोडिंग, और स्लोगन और अन्य अभियान संदेशों के बीच की बातचीत। इसके अतिरिक्त, संज्ञानात्मक प्रसंस्करण पर नारों के दीर्घकालिक प्रभावों और विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों में नारों के प्रभाव का अध्ययन उनकी प्रभावशीलता की अधिक व्यापक समझ में योगदान देगा।

अंततः, चुनाव नारों की प्रभावशीलता पर संज्ञानात्मक प्रसंस्करण के प्रभाव को पहचानने से अभियान प्रबंधकों और राजनीतिक उम्मीदवारों को सम्मोहक संदेश विकसित करने की अनुमति मिलती है जो मतदाताओं के साथ प्रतिध्वनित होते हैं, उनकी धारणाओं को आकार देते हैं, और संभावित रूप से चुनावी परिणामों को प्रभावित करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

- 1 डुकमैन, जेएन, और पार्किन, एम। (2005)। मीडिया पूर्वाग्रह का प्रभावरूप संपादकीय तिरस्कार मतदाताओं को कैसे प्रभावित करता है। *जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स*, 67(4), 1030-1049।
- 2 अयंगर, एस., और किंडर, डी. आर. (1987)। समाचार जो मायने रखता है- टेलीविजन और अमेरिकी राय। *शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस*।
- 3 कैद, एल.एल., और होल्टज-बच्चा, सी. (एड्स।)। (2018)। *द सेज हैंडबुक ऑफ पॉलिटिकल एडवर्टाइजिंग*। ऋषि प्रकाशन।
- 4 लुपिया, ए., और मैकक्यूबिन्स, एम.डी. (1998)। लोकतांत्रिक दुविधारूप क्या नागरिक वह सीख सकते हैं जो उन्हें जानने की जरूरत है? *कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस*।

- 5 मोय, पी।, और पफ़ो, एम। (2000)। सभी के प्रति द्वेष के साथ? लोकतांत्रिक संस्थाओं में मीडिया और जनता का विश्वास। *वेस्टव्यू प्रेस*।
- 6 प्राइस, वी., और टेक्सबरी, डी. (1997)। समाचार मूल्य और जनमत रूप मीडिया प्राइमिंग और फ्रेमिंग का एक सैद्धांतिक खाता। *जी. बार्नेट एंड एफ.जे. बोस्टर (ईडीएस)* में, *संचार विज्ञान में प्रगति (वॉल्यूम 13, पीपी. 173-212)*। एब्लेस पब्लिशिंग।
- 7 स्ट्राउड, एनजे (2008)। मीडिया का उपयोग और राजनीतिक पूर्वाग्रहरूप चयनात्मक जोखिम की अवधारणा पर दोबारा गौर करना। *राजनीतिक व्यवहार*, 30(3), 341-366।